Lec-14

Smt. Shanta Singh (1)
Dept. of LSW
SNSRKS college, Saharsa

Wages
(मजदूरी)

श्रम उत्पादन का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण साधन है। औद्योगिकीकरण के विकास एवं प्रौद्योगिक तथा आर्थिक प्रगति के साथ-साथ श्रमिकों या कर्मचारियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। आज विश्व के कई देशों में मजदूरी-अर्जकों के स्थायी वर्ग (permanent class of wage-earners) में जनसंख्या के अनेक लोग आ चुके हैं। अगर किसी कारणवश श्रमिकों को मजदूरी नहीं मिलती, तो केवल उन्हें ही नहीं, बल्कि उनके परिवार के अन्य सदस्यों को भी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कल्याणकारी राज्य का उदय तथा प्रजातांत्रिक एवं मानवीय सिद्धान्तों के व्यापक विस्तार के कारण आज श्रमिकों को उत्पादन तंत्र का साधनमात्र ही नहीं समझा जाता। जनसंख्या के एक महत्वपूर्ण अंश होने के कारण उनके जीवन-स्तर को ऊँचा बनाए रखने के लिए सर्वत्र प्रयास किए जा रहे हैं। श्रमिकों के जीवन स्तर और उन्हें मिलने वाली मजदूरी की मात्रा में गहरा संबंध होता है। इस तरह श्रम समस्याओं एवं श्रम अर्थशास्त्र के अध्ययन में मजदूरी का विशेष स्थान है और इसका महत्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है।

कई अर्थशास्त्रियों ने मजदूरी की परिभाषा अपने-अपने ढंग से दी है। इनमें मार्शल (Marshall),

Scanned with CamScanner

यह धन के वितरण में श्रमिक को दिया जाने वाला वह भाग है, जिसे धन के उत्पादन में उसके प्रयासों के बदले दिया जाता है, और यह लगान, सूद या लाभ से भिन्न होता है जो क्रमशः भूमि, पूँजी तथा उद्यमी के लिए पारिश्रमिक होते हैं। मजदूरी शब्द श्रमिक के सभी प्रकार के पारिश्रमिक के साथ लागू नहीं होता, बल्कि विशेष रूप से भाड़े के श्रमिकों के साथ लागू होता है।"

(Wages, The income received by the worker in exchange for his labour it is the share in the distribution of welth assigned to the worker in return for his efforts in the production of wealth as distinct from rent, interest and profit, which are the remuneration of land, capital and of the entrepreneur respectively. The term 'Wage' does not apply to all remuneration for labour, but more specifically to that paid to hired employees)

अलन गिलपिन (Alan Gilpin) ने आर्थिक शब्दावली शब्दकोष (Dictionary of economic terms) में मजदूरी की परिभाषा देते हुए कहा है — "यह एक व्यापक शब्द है जिसमें श्रमिक के विभिन्न प्रकार के सभी उपार्जन सम्मिलित होते हैं।"

(It is a comprehensive term covering all the different forms of earnings of labour)

कई श्रम विधानों, जैसे कारखाना अधिनियम,

मजदूरी भुगतान अधिनियम तथा न्यूनतम मजदूरी अधिनियम में भी मजदूरी की परिभाषाएँ दी गई हैं, लेकिन इन परिभाषाओं का उल्लेख यहाँ आवश्यक नहीं; क्यों कि वे अधिनियमों के विशेष संदर्भ में प्रयुक्त किए गए हैं।

सामान्यतः, यह कहा जा सकता है कि श्रम को उसकी सेवाओं के लिए दी गई कीमत ही मजदूरी है। दूसरे शब्दों में, मजदूरी राष्ट्रीय आय का वह भाग है, जो श्रम को उत्पादन-क्रिया में उसके सहयोग या उसकी सेवाओं के लिए दिया जाता है। मजदूरी शारीरिक या मानसिक किसी भी प्रकार की सेवाओं के लिए दी जा सकती है। श्रम अर्थशास्त्र के हेतु-कोण से श्रमिकों या कर्मचारियों को, चाहे वे कारखानों, खानों, कार्यालयों या अन्य प्रतिष्ठानों या सेवाओं में नियोजित क्यों न हों, उनकी सेवाओं के लिए दी जाने वाली कीमत मजदूरी कहलाती है। यहाँ मजदूरी के महत्वपूर्ण तत्वों का उल्लेख उचित प्रतीत होता है। ये तत्व हैं –

(क) मजदूरी उत्पादन क्रिया में श्रमिकों को उनकी सेवाओं के लिए दिया जाने वाला पारिश्रमिक है;

(ख) मजदूरी शारीरिक या मानसिक किसी भी प्रकार के श्रम के लिए पारिश्रमिक है;

(ग) मजदूरी नकद या प्रकार में दी जा सकती है;

(घ) मजदूरी के भुगतान के लिए कोई भी अवधि हो सकती है, जैसे दैनिक, साप्ताहिक या मासिक

मौद्रिक या मुद्रा-रूप मजदूरी और वास्तविक मजदूरी
(Money wages and Real wages)

मौद्रिक या मुद्रा-रूपी मजदूरी (Money wages)

Scanned with CamScanner

किसी श्रमिक को उसके श्रम के लिए जो मुद्रा मजदूरी मुद्रा में या नकद दी जाती है उसे मौद्रिक या मुद्रा रूप मजदूरी कहते हैं। अगर किसी श्रमिक को उसके कार्य के लिए 500 रु प्रतिमाह मजदूरी दी जाती है तो उसकी मजदूरी 500 रुपये प्रतिमाह कही जायेगी। इसी तरह 400 रु, 600 रु तथा 800 रु प्रतिमाह मजदूरी वाले श्रमिक की मुद्रा रूप मजदूरी क्रमशः 400 रु 600 रु 800 रु प्रतिमाह कही जायेगी। यह संभव है कि मूल्य में उतार-चढ़ाव के कारण मुद्रा-रूप मजदूरी से खरीदे जानेवाले सामानों या सेवाओं की मात्रा एक समान नहीं हो उदाहरणार्थ, जब श्रमिक के उपभोग में आनेवाली वस्तुओं की कीमत कुछ अधिक बढ़ जाती है तो 500 रु प्रतिमाह मुद्रा रूप मजदूरी पाने वाला श्रमिक मूल्य वृद्धि के कारण अपनी मजदूरी से कम की सामान खरीद सकता है। लेकिन जब उसके उपभोग में आनेवाली वस्तुएँ सस्ती हो जाती हैं, तो वह अपनी मुद्रा-रूप से अधिक समान खरीद सकता है। दोनों दशाओं में श्रमिक की मुद्रा-रूप मजदूरी 500 रु प्रतिमाह कही जायगी।

वास्तविक मजदूरी (Real wages)

मुद्रा-रूप मजदूरी की क्रय-शक्ति को वास्तविक मजदूरी कहते हैं। वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा ही वास्तविक मजदूरी कहलाती है। जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है, वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमत सदा एक समान नहीं होती।

Scanned with CamScanner

मुद्रा-स्फीति (inflation) की अवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की कीमत बढ़ी हुई होती है। मूल्य-वृद्धि के कारण श्रमिक की मुद्रा-रूप मजदूरी से कम वस्तुएँ तथा सेवाएँ खरीदी जा सकती हैं। दूसरी ओर जब वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य कम हो जाते हैं, तो श्रमिक अपनी मुद्रा-रूप मजदूरी से कम वस्तुएँ तथा सेवाएँ खरीदी जा सकती हैं। दूसरी ओर जब वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य कम हो जाते हैं, तो श्रमिक अपनी मुद्रा-रूप मजदूरी से अधिक मात्रा में वस्तुएँ तथा सेवाएँ खरीद सकता है और ऐसी दशा में उसकी वास्तविक मजदूरी अधिक होगी। अगर मान लिया जाय कि किसी श्रमिक की मुद्रा-रूप मजदूरी 500 रु. प्रतिमाह है तो मुद्रा अफीति या महँगाई की दशा में उसकी वास्तविक मजदूरी कम होगी तथा सस्ती की दशा में उसकी वास्तविक मजदूरी अधिक होगी, यद्यपि दोनों ही अवस्थाओं में उसकी मुद्रा-रूप मजदूरी एक ही अर्थात् 500 रु. प्रतिमाह ही कही जाएगी।

विगत वर्षों में भारतीय श्रमिकों, विशेषकर औद्योगिक श्रमिकों, की मुद्रा-रूप मजदूरी में अत्यधिक रूप से वृद्धि हुई है, लेकिन सामान्यतः उनकी वास्तविक मजदूरी या तो स्थिर रही है या उसमें ह्रास हुआ है। भारत सरकार का श्रम ब्यूरो (Labour Bureau) देश के विभिन्न औद्योगिक केन्द्रों तथा सारे देश के लिए उपभोक्ता कीमत सूचकांक (consumer price Index Number) तैयार करता है, जिनसे

श्रमिकों के उपभोग में आनेवाली वस्तुओं, जैसे भोजन, वस्त्र, आवास तथा अन्य विविध वस्तुओं के मूल्यों में परिवर्तन की मात्रा का पता चलता रहता है। इन सूचकांकों के आधार पर मुद्रा-रूप मजदूरी की क्रय शक्ति या वास्तविक मजदूरी की जानकारी मिलती रहती है। मूल्य-वृद्धि से होने वाली मजदूरी की क्रय-शक्ति के ह्रास की क्षतिपूर्ति के लिए महँगाई भत्ता देने की योजनाएँ व्यापक रूप से क्रियान्वित की गई हैं। अधिकांश योजनाओं में महँगाई भत्ता उपभोक्ता कीमत सूचकांकों से जुड़ा होता है।

वास्तविक मजदूरी की मात्रा कई बातों पर निर्भर करती है; जिनमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण हैं-

1. वस्तुओं और सेवाओं की कीमत (Price of goods and services)— उन वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ने से जिन्हें श्रमिक और उनके परिवार के लोग उपभोग में लाते हैं, वास्तविक मजदूरी कम हो जाती है। दूसरी ओर, जब इन वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें गिर जाती हैं, तब वास्तविक मजदूरी बढ़ जाती है। भारत में श्रमिकों में मुद्रा-रूप मजदूरी निरंतर बढ़ती गई है, लेकिन उसके अनुपात में उनकी वास्तविक मजदूरी नहीं बढ़ पाई है।

2. अनुषंगी हितलाभों की मात्रा (Extent of fringe benefits)- कई उद्योगों या नियोजनों में श्रमिकों को विविध प्रकार के हितलाभ उपलब्ध रहते हैं, जैसे आवासीय अनुषंगीय सुविधा, चिकित्सा-सुविधा, शैक्षिक सुविधाएँ, सामाजिक सुरक्षा,

Scanned with CamScanner

रियायती दरों पर वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता। इन सुविधाओं के मिलने से श्रमिक कई जगहों पर खर्च करने से बच जाते हैं, अन्यथा उन्हें इनपर अपनी मजदूरी से ही खर्च करना पड़ता।

3. श्रमिकों का जीवन-स्तर (Standard of living of workers)- कुछ श्रेणियों के श्रमिकों के रहन-सहन का स्तर बहुत ऊँचा होता है तथा वे आराम की कई वस्तुओं पर भी खर्च करते रहते हैं। दूसरी ओर, कई श्रमिकों के रहन-सहन का स्तर परंपरा से ही निम्न रहता आया है तथा उनके उपभोग में आनेवाली वस्तुएँ अत्यंत ही सीमित रहती हैं। उन्हें आराम या विलास की वस्तुओं या उनकी कीमतों में कोई दिलचस्पी नहीं रहती। वे केवल जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं जैसे भोजन सामग्री, वस्त्र आदि की कीमतों से अधिक प्रभावित होते हैं। इस तरह, जब कई वस्तुओं की कीमतें साथ-साथ बढ़ने लगती हैं तो निम्न जीवन-स्तर वाले श्रमिकों की तुलना में ऊँचे जीवन-स्तरवाले श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी अधिक मात्रा में घटती है। केवल अनिवार्य आवश्यकताओं, जैसे खाद्यान्न और वस्त्र की कीमतों के बढ़ने से ऊँचे जीवन-स्तर वाले श्रमिकों की तुलना में निम्न जीवन-स्तर वाले श्रमिक अधिक प्रभावित होते हैं।

4. कार्य की प्रकृति (Nature of work)- जो काम अधिक खतरनाक और जोखिम भरे होते हैं, उनपर काम करने वाले श्रमिकों को अपने स्वास्थ्य की रक्षा, इलाज आदि

Scanned with CamScanner

पर अधिक खर्च करना पड़ता है। इसी तरह, कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं, जिनपर अच्छे पहनावे और सज-धजकर जाने की आवश्यकता होती है। अधिक मजदूरी मिलने पर भी इन श्रेणियों के श्रमिकों या कर्मचारियों की वास्तविक मजदूरी कम पाती है।

5. भुगतान की नियमितता (Regularity of Payment)- वास्तविक मजदूरी, मजदूरी-भुगतान की नियमितता पर भी निर्भर करती है। जब श्रमिकों के उपभोग में आनेवाली वस्तुओं की कीमतें बहुत तेजी से बढ़ने लगती है तो मजदूरी-भुगतान में विलम्ब होने से उन्हें कुछ सामानों पर अधिक खर्च करना पड़ता है। इसी तरह, जहाँ श्रमिकों को अधिक अंतरालों, जैसे दिन, सप्ताह आदि की कालावधि के अनुसार भुगतान किया जाता है, वहाँ वे ऊँचे भाव में समान खरीदने में असमर्थ रहते हैं, जिसके चलते उनकी वास्तविक मजदूरी कम हो जाती है।

6. अन्य (others)- वास्तविक मजदूरी कार्य के घंटों मजदूरी-भुगतान के तरीकों तथा जीवन की आकस्मिकताओं पर भी निर्भर करती है।

Scanned with CamScanner